शोध–सार

शोधार्थी : मोहसिना बानो

शोध निर्देशक : प्रो. नीरज कुमार

विभाग : हिन्दी

विषय : **समकालीन ग्राम–आधारित हिन्दी उपन्यासों में चित्रित स्त्री–छवि (1990 से 2010)**

'ग्राम आधारित हिंदी उपन्यासों में चित्रित स्त्री–छवि' विषय पर शोध के बाद यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण समाज कालानुसार स्वरूप बदलता रहा है। वह अब काफी हद तक बदल चुका है लेकिन अपनी परम्परा और संस्कृति से आज भी जुड़ा हुआ है। गाँव के लोग न तो पूरी तरह से आधुनिक हो पाए हैं और न ही पूरी तरह से अपनी जमीन से जुड़े हुए हैं। समकालीन हिंदी उपन्यास, ग्रामीण जीवन की समस्याओं और संक्रमणकालीन बदलावों आदि की व्यापक और यथार्थ प्रस्तुति करते हैं। प्राचीनकाल से गाँव भारतीय समाज–व्यवस्था की आधारभूत एवं महत्त्वपूर्ण इकाई रहा है। गाँव का उदय इतिहास में कृषि व अर्थ–व्यवस्था के उदय के साथ जुड़ा हुआ है। भारतीय ग्रामीण समाज की कुछ अपनी अलग विशेषताएँ हैं जिससे उसे गाँव की संज्ञा दी गयी है। समकालीन हिंदी उपन्यास गाँव के बदलते स्वरूप को हर पहलू से उभारते हैं। उनमें उसके नकारात्मक और सकारात्मक बदलावों को यथार्थ रूप में रेखांकित किया गया है। समकालीन ग्राम आधारित उपन्यासों में स्त्रियों की स्थिति में बदलाव को चित्रित किया गया है। ग्रामीण स्त्रियाँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रही है। वे सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से चेतना–सम्पन्न हो रही हैं। सभ्यता के आरम्भिक इतिहास से ज्ञात होता है कि आदिम मानव योद्धा और शिकारी होते हुए भी स्त्री के अधिपत्य में रहता था। स्त्रियों पर किसी का नियंत्रण नहीं था। उत्तरवैदिक काल से स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन होने आरम्भ हो गये थे। मध्यकाल में स्त्री की स्थिति काफी शोचनीय हो गयी थी। पर्दा प्रथा, विधवा विवाह निषेध, बहुपत्नी प्रथा व्यवहार में स्वीकारा जाने लगा। समाज सुधारकों द्वारा स्त्रियों की स्थिति में सुधार आए, जिनमें महिलाओं, का भी योगदान था। आज स्त्री की स्थिति में सुधार का कारक पुरुष मानसिकता में परिवर्तन है। स्त्री अस्मिता के प्रश्न को लेकर प्रारंभ से अब तक संघर्ष जारी है। स्त्री आत्मनिर्भरता ने पुरुषों के साथ उसके संबंधों को बदला है। जिस प्रकार स्त्री आंदोलन पाश्चात्य देशों में हुआ। वैसा भारत में नहीं हुआ। वहाँ स्त्रियों ने लगभग एक सदी तक अपनी मुक्ति की लड़ाई लड़ी। भारत में यह लड़ाई विदेशी दासता व प्राचीन रूढ़ियों के विरुद्ध एक साथ लड़ी गयी। ग्रामीण स्त्री जीवन को लेकर अनेक उपन्यासों की रचना की गयी है। इन उपन्यासों में रचनाकारों ने ग्रामीण स्त्री की व्यथा–कथा को गहराई से अभिव्यक्त किया है। शोषण व अत्याचारों को ग्रामीण स्त्री नियति मानकर नहीं बैठती है अपितु अपनी नियति खुद बनाने का उपक्रम करती है। ग्रामीण नारी का जीवन घर परिवार, खेती–बारी और परिवार के दायित्वों का निर्वाह

करने में व्यतीत होता है। स्त्रियों का जीवन सामान्यतः अधिक संघर्षपूर्ण होता है। 'औरत' उपन्यास में चंपा उपाध्याय के माध्यम से ग्रामीण स्त्री के वैधव्य जीवन को दर्शाता है। यह उपन्यास नारी जीवन के संघर्ष की अभिव्यक्ति है। सरस्वती और रूपवा में जात के आधार पर शोषण होता है। ग्रामीण समाज में स्त्री को उसके जाति के अनुकूल जीना पड़ता है। 'बेतवा बहती रही' में उर्वशी, 'पार' में राउतिनों, 'काला पहाड़' में अधेड़ उम्र के पुरुषों के साथ ब्याहने के लिए कम उम्र की लड़कियों की बिक्री आदि स्त्रियों की दयनीय स्थिति को रेखांकित करता है। 'पार' की मुइया और फुलिया उपन्यास में एक खास जाति की अस्मिता का प्रतिरूप चरित्र है। मैत्रेयी पुष्पा ने भारतीय ग्रामीण स्त्री को साहित्य की मुख्यधारा से जोड़कर उसके शोषणयुक्त संघर्षमय जीवन व स्वाभिमान को अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है। इद्न्नमम्, चाक, अल्मा कबूतरी, बेतवा बहती रही आदि उपन्यास ग्रामीण स्त्रियों के संघर्ष, साहस व स्वाभिमान का आख्यान हैं। भगवानदास मोरवाल के उपन्यास 'रेत', और 'बाबल तेरा देस में', ग्रामीण स्त्री की आहत संवेदनाओं को मुखरित करता है। मिथिलेश्वर का 'माटी कहे कुम्हार से', शिवमूर्ति का 'तर्पण', 'आखिरी छलांग', विवेकीराय का 'नमामि ग्रामम्', मधुकर सिंह का 'बेनी माधव तिवारी की पतोह में', ग्रामीण स्त्री जीवन की प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष सच्चाइयों को मुखरित करने के लिए उक्त उपन्यासों को दर्शाया गया है। आज अर्थव्यवस्था के प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री का प्रवेश है। ग्रामीण स्त्रियाँ जो निम्नवर्ग की हैं वह आरंभ से ही पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करती हैं। ग्रामीणों का व्यवसाय उनकी जाति के अनुकूल होते हैं गाँव की शिक्षित स्त्रियाँ आंगनबाड़ी चलाती है, स्कूलों में पढ़ाती है, दलित एवं निम्न वर्ग की स्त्रियाँ खेती एवं मजदूरी करती हैं। उपन्यासों की भाषा परिवेशानुकूल एवं पात्रानुकूल है।